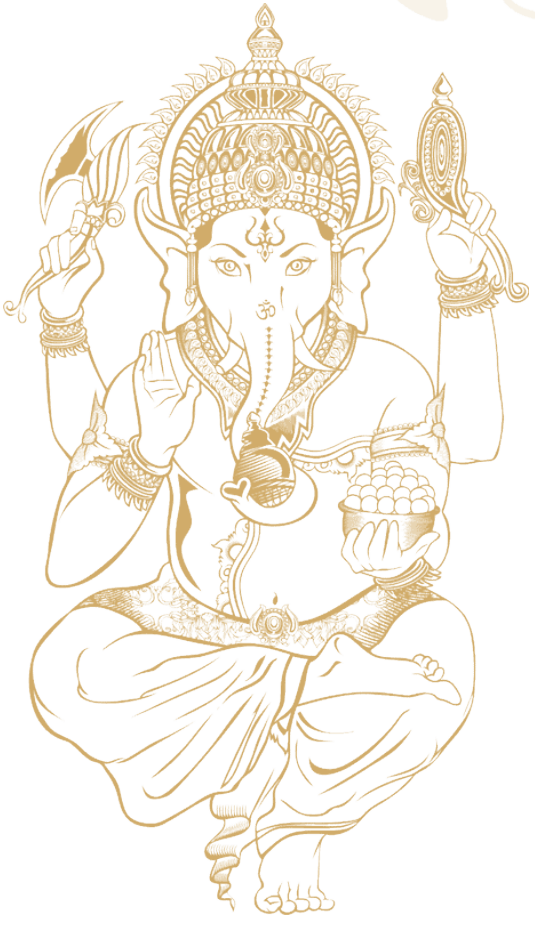

Raghav gupta

Niyati mittal

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121110303

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/03/1996	जन्म तिथि	19/02/1998
रविवार	दिन	गुरुवार
घंटे 23:12:00	जन्म समय	16:46:00 घंटे
घटी 41:28:14	जन्म समय(घटी)	24:33:29 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Kota
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	25:11:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:26:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:36:42	सूर्योदय	06:58:12
18:26:29	सूर्यास्त	18:22:07
23:48:20	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:47

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 2वर्ष 7मा 10दि	29:24:01	तुला	लग्न	कर्क	16:29:51	शनि 16वर्ष 10मा 26दि
बुध	26:37:57	कुंभ	सूर्य	कुंभ	06:46:24	बुध
20/10/2017	01:09:26	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	04:48:08	16/01/2015
20/10/2034	25:19:07	कुंभ	मंगल	कुंभ	25:52:52	17/01/2032
बुध 18/03/2020	11:32:08	कुंभ	बुध	कुंभ	04:25:56	बुध 14/06/2017
केतु 15/03/2021	19:28:28	धनु	गुरु	कुंभ	09:45:47	केतु 11/06/2018
शुक्र 14/01/2024	11:21:07	मेष	शुक्र	धनु	28:00:36	शुक्र 11/04/2021
सूर्य 19/11/2024	02:47:33	मीन	शनि	मीन	23:15:56	सूर्य 16/02/2022
चन्द्र 21/04/2026	23:31:53	कन्या	राहु व	सिंह	16:45:45	चन्द्र 18/07/2023
मंगल 18/04/2027	23:31:53	मीन	केतु व	कुंभ	16:45:45	मंगल 14/07/2024
राहु 04/11/2029	09:23:27	मक	हर्ष	मक	16:07:11	राहु 01/02/2027
गुरु 10/02/2032	03:17:07	मक	नेप	मक	06:56:28	गुरु 08/05/2029
शनि 20/10/2034	09:18:12	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	14:07:13	शनि 17/01/2032

लग्न-चलित

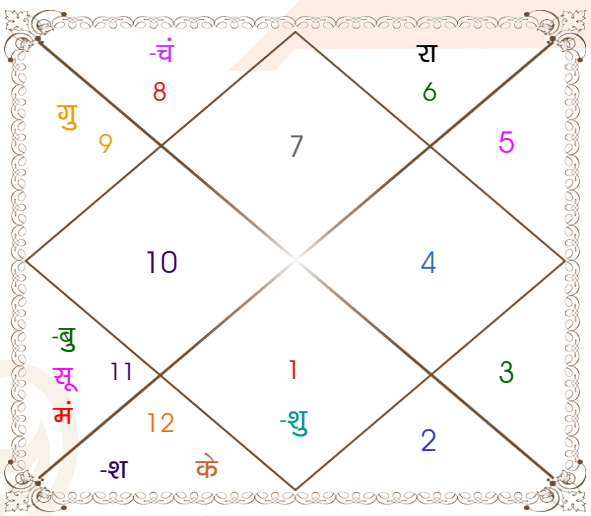

लग्न-चलित

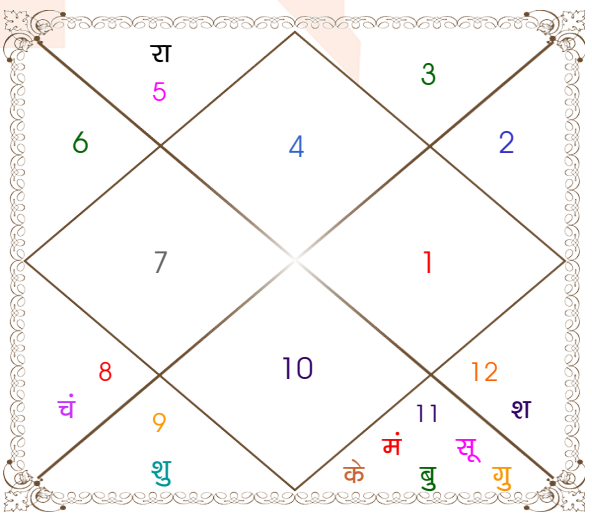

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	मृग	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

त्ंहींअ हनचजं का वर्ग सर्प है तथा छपलंजप उपजजंस का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार त्ंहींअ हनचजं और छपलंजप उपजजंस का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

त्ंहींअ हनचजं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

छपलंजप उपजजंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल छपलंजप उपजजंस कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु छपलंजप उपजजंस कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि त्ंहींअ हनचजं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्ंहींअ हनचजं तथा छपलंजप उपजजंस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।